NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

उपज को प्रभावित करने वाली ध्यान देने योग्य जानकारी

लालू प्रसाद, राकेश कुमार, डॉ.सी. एन. राम

(1) **पौधों की संख्या** -पौधों की संख्या का होना जो कि अन्तरण द्वारा नियन्त्रित होता है। यहकिसी क्षेत्र की उपज के लिये आवश्यक है।इकाई क्षेत्र में फसल की उपज पौधे की उपज इकाई क्षेत्र में पौधों की संख्या पर निर्भर करती है।

2- **पौधे की ऊँचाई** - पौधे की ऊंचाई का उसके भार पर प्रभाव पड़ता है। यदि चारे वाली फसलों को ध्यान रखते हुए देखा जाए तो फसलों में पौधों की ऊँचाई उपज के लिये विशेष महत्त्व रखती है।

(3) **पौधों में कल्लों की संख्या**- पौधे के कल्लों की संख्या भी ऊपज पर अपना प्रभाव डालती है। फसल के जिस पौधे में कल्ले अधिक होंगे, उस पौधे विशेष की उपज अधिक होगी।जैसे गेहूँ की देशी जातियों की तुलना में गेहूं की बौनी जातियों में कल्ले (Tillers) अधिक होते है। अतः बौनी किस्मों से उपज अधिक प्राप्त होती है।

4) **फलियों की संख्या**- प्रति पौधे में जितनी अधिक बालियों या फलियाँ होंगी उसमें अन्न की उपज उतनी ही अधिक प्राप्त होगी है।

(5) **फली में दानों की संख्या** - प्रत्येक बाली में जितने अधिक दाने होंगे, उपज उतनी ही अधिक होगी, साथ ही साथ दाने का भार भी: कुल उपज पर सीधा प्रभाव रखता है।

(6) **पौधे में पतियों की संख्या** जब पत्तियों की संख्या अधिक होगी तब वह भोजन अधिक बनाएगी और उपज भी अधिक मिलेगी विशेष रूप से चारे वाली फसलें व ऐसी फसलें जिनकी पत्तियाँ सब्जी के रूप में प्रयोग में लाई जाती है प्रति पौधे पर पत्तियों की संख्या व आकार, उपज पर प्रत्यक्ष प्रभाव रखती है।

(7) **फूल का आकार** - सब्ज़ी वाली फसलों में जैसे फूलगोभी का उपज पर सीधा प्रभाव रखता है।

लालू प्रसाद, राकेश कुमार (शोध छात्र) सब्जी विज्ञान विभाग आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या

डॉ.सी. एन. राम, प्राध्यापक विभागाध्यक्ष सब्जी विज्ञान विभाग आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या (उ.प्र.)

(8) **प्रति पौधा कन्दों की संख्या और आकार**- मुख्य रुप से जैसे आलू की फसल में प्रति पौधा जितने अधिक कन्दों की संख्या होगी व कन्द का आकार जितना बड़ा होगा उपज भाई उतनी अधिक मिलेगी है।

(9) **बल्ब का आकार** - यह मुख्य रुप से जैसे प्याज व लहसुन वाली फसलों में बल्ब का आकार (लम्बाई व मोटाई) बड़ा होने पर उपज अधिक भी उतनी मिलेगी है।

(10) **बीजों में तेल की प्रतिशतता** - इसका मुख्य रूप से तिलहन वाली फसलों में प्रभाव देखा गयाहैबीजों के अन्दर तेल की प्रतिशतता; तेल की उपज पर सीधा प्रभाव रखती है।

(11) **पौधों के अंगों में सुक्रोज की प्रतिशतता** - यह मुख्य रुप से शर्करा देने वाली फसलों में पौधों के जिन अंगों से शर्करा तैयार करते है। उन में देखा गया है है।

(12) **प्रति पौधा गुलरों की संख्या व आकार** - कपास के पौधों पर गूलरों की संख्या व गूलर का आकार, कपास के रेशों की उपज पर प्रभाव डालता है।

(13) **लिट में रुई व बीज का अनुपात** - एक लिंट में रेशा (रुई) जितना अधिक होगा, फसल की कुल उपज उतनी ही अधिक प्राप्त होगी।

(14) **प्रति पौधा भुट्टों की संख्या** - यह प्रभाव मुख्य रूप से मक्का आदि की फसल में अन्न की उपज को, पौधों पर लगे भुट्टों की संख्या प्रभाव डालती है।

(15) **भुट्टे की लम्बाई व मोटाई**- मक्का में भुट्टे की लम्बाई व मोटाई का भी उपज पर प्रभाव सीधा पड़ता है।

(16) **प्रति भुट्टा दानों की कतारों की संख्या**- भुट्टे में दानों की कतारों की संख्या अधिक होने पर उपज अधिक व कतारों की संख्या कम होने पर उपज कम हो सकती है।

(17) **प्रति कतार दानों की संख्या** - प्रति कतार जितने अधिक दाने होंगे उतनी अधिक उपज होगी।